उपसंहार

हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार रही है । उन्होंने काव्य के साथ कहानियाँ, रेखाचित्र, निबंध लिखे हैं । उन्हें 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी पहचाना जाता है । महादेवी का हिंदी साहित्य को बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी ने समाज जीवन के साथ भारत वर्ष की ग्रामीण जनता के दुख दर्द का चित्रण किया है । छायावाद और रहस्यवाद के क्षेत्र में उनका नाम अग्रणी है । उन्होंने ने साहित्य के अतिरिक्त सामाजिक क्षेत्र में उज्ज्वल कार्य किया है ।

उनका व्यक्तित्व विविध पहलुओं से सजा हुआ था । जिसमें भावुक स्वभाव की छवि काफी प्रभावकारी रही है । उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर भी रहा है । प्रकृति, परिवार, समाज तथा समाज का शोषित, पीड़ित, सर्वहारा वर्ग आदि द्वारा प्रेरित होकर साहित्य सृजन किया है । दीन-हीन, पीडित गरिबों, जर्जर परंपरा में जकडी नारियों और असहाय विवश मानवों का कल्याण करने के लिए उनका मन सदैव संवेदनशील रहा हैं ।

वह महात्मा गांधीजी के समाज सेवा कार्य से बहुत प्रभावित थी । उन्होंने प्रधानाचार्य पद पर काम करते समय समाजसेवा तथा पशु-पक्षियों के जीवन के साथ अपना अटूट संबंध स्थापित किया था । उनके साहित्यिक, शैक्षिक तथा सामाजिक योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया । उनके 'यामा' काव्य संग्रह को साहित्य का 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से पुरस्कृत किया है ।

महादेवी वर्मा के 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' रेखाचित्रों में विभिन्न वर्ग, आयु एवं समुदाय के पात्र है । 'रामा', 'घीसा', अंधा अलोपी', 'बदलू', चीनी फेरीवाला', जंगबहादुर', 'ठकुरी बाबा' आदि पुरूष पात्रों के रेखाचित्र हैं । 'भाभी', 'बिंदा', 'सबिया', 'बिट्टो', 'बालिका माँ', 'अभागी स्त्री', 'भक्तिन', 'लछमा', 'मुन्नु की माँ', 'बिबिया', 'गुँगियाँ' आदि नारी पात्र हैं । इन

सारे रेखाचित्रों में स्वामी भक्ति, बंधुप्रेम, गुरूभक्ति, समर्पण, वात्सल्य आदि गुणों की प्रमुखता दिखाई देती हैं । सभी पात्रों का चित्रण यथार्थ जीवन से संबधित हैं । रेखाचित्रों के सभी पात्रों का वर्णन महादेवी ने इस खुबी से किया है कि इन पात्रों का संपूर्ण चित्र जीवंत रूप में हु-ब-हू चित्रित किया है । उनका सभी के साथ निकटतम संबंध रहा है ।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों का उद्देश्य मनुष्य के हृदय में करूणा उत्पन्न कराना रहा है । 'रामा', 'घीसा', 'अंधा अलोपी', 'बदलू कुम्हार', चीनी फेरीवाला', जंगबहादुर', ठकुरी बाबा', ये सारे पात्र गरीब एवं असाहय हैं । वे अनपढ़, गँवार और समाज के द्वारा पीड़ित है । उनका मानसिक एवं शारीरिक शोषण भी हुआ है । आज भी समाज में कई पात्र इस रूप में दिखाई देते हैं । रेखाचित्र के पात्र मानवीय गुणों से परिपूर्ण हैं । वे अनपढ़ सापंत्तिक स्थिति से अत्यंत गरीब होते हुए भी कार्यकुशल, कर्तव्यपरायण, ईमानदार हैं । ये सारे पात्र स्वामीभक्ति, त्याग, कर्मठता, करूणा से भरे हैं ।

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में समाज के उग्र रूप का भी अंकन किया है । आज भी समाज में कई लोग बेटा और बेटी को समान रूप में मानने के लिए तैयार नहीं है । कई लोग बेटे को ही सर्वश्रेष्ठ, कुलदीपक मानते है । उसे ही पढ़ाया जाता है । लड़की को पराया धन समझा जाता है । उन्होंने महादेवी ने बेटा-बेटी के इस भेदभाव को दूर करने की कोशिश की है ।

महादेवी वर्मा ने समाज में अनादि काल से चले आए अमीर-गरीब के भेदभावों को रेखाचित्रों में अंकित किया है । आज भी अमीर-गरीब का भेद मिटाए नहीं मिटता । उच्चवर्ग के बच्चे पब्लिक स्कूलों तथा अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं, किंतु कई गरीब बच्चे प्राथमिक शिक्षा से भी वंचित हैं । 'घीसा' पढ़ना चाहता है परंतु उसके पास धन नहीं है । 'मुन्नू' के साथ गाँव के सभी बच्चे पढ़ना चाहते हैं, लेकिन अमीर लोग किसी भी प्रकार की सहायता करने के लिए तैयार नहीं है। 'जंगिया', 'धनिया' अत्यंत करूण पात्र है । पर्वतीय प्रदेशों में रहने के कारण उनकी आर्थिक

स्थिति गंभीर है । धनिक लोग सैंकडों मीलों की यात्रा मोटरों, रेलगाडी, हवाई जहाज आदि से सुखर बनाते हैं । साथ ही दूसरों को दुख देकर अथवा उनके परिश्रम पर भी ये सुख प्राप्त करते हैं । आज प्रत्येक क्षेत्र में छीना–कपटी, कामचोरी का बोलबाला है । जंगिया और धनिया दरिद्र होते हुए भी अपने कर्त्तव्य एवं सदाचार के कारण चमकते रहे हैं । दोनो में प्रातः पहले उठने की होड़ इसलिए लगी रहती है कि अधिक वजनवाला बोझ अपने जिम्मे कर ले । महादेवी ने रेखाचित्रों में असहाय, दीन–हीन, दलित, पीडित, अपाहिज, अनाथ, महिला वर्ग आदि का चित्रण प्रभावी रूप में किया है ।

महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों में धोबी, काछी, ब्राह्मण कुमहार जातियों का अंकन किया हैं । अशिक्षा के कारण इनमें अज्ञान है । ये सभी जातियाँ उपेक्षित रही हैं । समाज द्वारा उनका शोषण होता रहा । वे अंधःश्रद्धा से जुड़े हुए दिखाई देते है । लेखिका सामाजिक समानता, ऐक्य की प्रेरक रही है । महादेवी ने उनकी वेदना को अपनी वेदना समझा है । 'बदलू', 'अंधा अलोपी', 'घीसा', 'मुन्नू' आदि रेखाचित्र इस श्रेणी में आते हैं । ये सभी अपने अधिकारों से वंचित है ।

हमारा देश वैसे तो स्त्री–जाति का पूरा सम्मान करता है लेकिन असलीयत में उसकी सीमा से अधिक उपेक्षा कर रहा है । इसलिए नारी को जागृत करने की पूरी कोशिश महादेवी ने अपने रेखाचित्रों में की है । समाज में नारी की स्थिति, उसके विविध गुण, नारी की वेदना, विधवा के लिए सामाजिक विषमताएँ, बहुविवाह–प्रथा तथा पीड़ित नारी की वेदनाओं के लिए रेखाचित्र पढ़नीय हैं । नारी समाज की गंभीर से गंभीर समस्याओं को उखाड़कर रखना महादेवी का प्रमुख लक्ष्य रहा है ।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित नारी पात्रों के अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत नारी पात्र निम्न वर्ग के हैं । नारी वर्ग की स्थिति दयनीय है । समाज ने हमेशा नारी को ही दोषी ठहराया है । उसके साथ पक्षपात किया है । 'भक्तिन', 'लछमा', पक्षपाती समाजव्यवस्था एवं मान्यताओं का विरोध करती है ।

समाज उसे चरित्रहीन मानता है । 'बिबिया' को चरित्रहीन समझा जाता है । उसे किसी भी घर में आदर का स्थान प्राप्त नहीं होता, वह अपने अस्तित्त्व के लिए झगडती है । 'भाभी', 'बिंदा', 'अभागी स्त्री', 'लछमा', अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं । 'भक्तिन' 'लछमा', अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करती हैं । 'बिबिया' मदयपि पति का विरोध करती है । अनेक कठिनाइयों तथा मानसिक शारीरिक यातनाओं के बावजूद भी इन नारियों के मन में जीवन के प्रति आसक्ति बनी हुई हैं ।

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में बाल–विवाह प्रथा को उजागर किया है । बिना जानने –समझने की उम्र में ही 'बालिका माँ' तथा 'बिबिया' का बाल–विवाह हुआ है । अनजाने पति की मृत्यु के कारण उन्हें वैधव्य प्राप्त होता है । समाज में विधवा नारी का कोई मूल्य नहीं होता । समाज उसकी ओर हीन दृष्टि से देखता है । उसे हर तरह कमजोर करने की कोशिश करता है । 'बिट्टी', 'बिबिया' का पुनर्विवाह होता है लेकिन उन्हें उस घर में भी इज्जत नहीं मिलती । उनपर अनेक प्रतिबंध लगाए जाते हैं । रेखाचित्रों में लेखिका ने विवाहित नारियों की दास्तान की पोल खोल दी है ।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में से अनेक पात्र विमाता द्वारा पीड़ित हैं । विमाता के अत्याचारों को 'रामा', 'बिंदा', 'चीनी फेरीवाला', पशु की तरह चुपचाप सहते हैं । इनमे से कुछ विमाता के अत्याचारों से दूर भागकर अनाथ बनकर जीवन जीते हैं । उनका जीवन ही संघर्षमय बन जाता है । विमाता के अत्याचारों के कारण ही 'चीनी फेरीवाला' की बहन को कुमार्ग पर चलने के लिए विवश होना पड़ता है । नारियाँ समाज का अंग होते हुए भी अशिक्षित एवं निम्न जाति की होने के कारण समाज उनकी ओर अलग दृष्टि से देखता है । महादेवी वर्मा का असाधारण प्रेम और सहानुभूति न केवल उपेक्षिताओं, परित्यक्ताओं, विधवाओं और अवैध संतानवाली माताओं के प्रति जागृत हुई, अपितु वेश्याओं के प्रति उनकी सद्भावना रही है । जिनके जिंदगी के मूल्य नित्य घटते–बढ़ते रहते हैं ।

रेखाचित्रों में चित्रित नारी कर्तव्यपरायण दिखाई देती है । पति के प्रति उसमें अनन्य प्रेम और विश्वास की भावना है । किसी भी हालत में वह अपने पति का साथ नहीं छोड़ना चाहती । वह अपने परिवार के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है । ये नारियाँ अपने अस्तित्त्व के प्रति स्वतंत्रता की भावना से जागृत दिखाई देती हैं । रेखाचित्रों में हमें नारी के विविध पहलुओं के दर्शन होते हैं । समाज में विवाह संस्था का अपना ही महत्त्व रहा है । रेखाचित्रों में बाल–विवाह, बहु–विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम–विवाह एवं अंतर्जातिय विवाह का अंकन दिखाई देता है । महादेवी ने इन रेखाचित्रों के माध्यम से नारी जीवन की कथा–व्यथा को वाणी देने का काम किया है ।

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में अपने समकालीन साहित्यकारों का चित्रण भी किया है । उनकी आर्थिक स्थिति को समाज के सामने उजागर किया है । इन्हीं साहित्यकारों के प्रति उनके मन में श्रद्धाभाव है । साहित्यकारों में उदारता, करूणा, कर्मठता, स्नेह, सहनशीलता आदि गुण दिखाई देते हैं । उन्होंने इन गुणों से संपन्न साहित्यकारों के पारिवारिक जीवन एवं व्यक्तित्व का चित्रण किया है । रेखाचित्रों में पशु–पक्षियों का भी चित्रण किया है । समाज जीवन से इनका घनिष्ठ संबंध रहा है । हर समय उन्होंने समाज की मद्द की है । ये पशु–पक्षी मनुष्य के एकांत के समय सुख का आधार बन गए हैं ।

महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । ग्रामीण लोग गरीब होते हैं, उनका रहन–सहन सीधा–सादा होता है परंतु वे अक्षय गुणों के भांडार होते हैं । उनका जीवन अभावों से भरा हुआ होता है । ग्रामीण समाज में नारी की स्थिति अच्छी नहीं होती । उसका पारीवारिक एवं सामाजिक शोषण होता है । फिर भी वह पतिव्रता होती है । ग्रामीण लोग रूढ़ि–परंपरा के कट्टर अनुयायी होते हैं । उनमें पूजापाठ अंधःविश्वास, जाति–भेद की भावनाएँ दिखाई देती हैं । इन सभी बातों के लिए महादेवी ने अशिक्षा को ही कारण

माना है । नारी की ओर महादेवी ने सहानुभूति प्रकट की है । उन्होंने नारी को अन्याय के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया है ।

उपलब्धियाँ

वस्तुतः प्रत्येक शोध प्रबंध की कई उपलब्धियाँ होती हैं जो अनुसंधान क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती हैं । प्रस्तुत विषय के अनुसंधान की मुख्य उपलब्धियाँ ये हैं–

1) महादेवी का स्वभाव भावुक और वेदना के भाव को महसूस करनेवाला है ।
2) महादेवी के रेखाचित्रों में विभिन्न वर्ग, आयु, समुदाय के पात्र हैं । नारी पात्रों की संख्या अधिक है ।
3) रेखाचित्रों के पात्र आर्थिक दृष्टि से अत्यंत गरीब किंतु मानवीय गुणों के भांडार से युक्त है । सभी पात्र त्याग, कर्मठता एवं करूणा से भरे हैं ।
4) रेखाचित्रों में स्वामीभक्ति, बंधु–प्रेम, गुरू–भक्ति, समर्पण, वात्सल्य आदि गुणों की प्रमुखता दिखाई देती हैं ।
5) महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों द्वारा बाल–विवाह, विधवा–विवाह, अनमेल विवाह, विमाता समस्या, अनाथ बालकों आदि समस्याओं को प्रभावात्मक ढंग से अंकित किया है ।
6) रेखाचित्रों में नारी जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है । समाज को समस्याओं के प्रति सचेत करने का प्रयास किया है ।
7) रेखाचित्रों में चित्रित पात्रों का चित्रण यथार्थ जीवन से संबंधित है ।
8) महादेवी वर्मा में साहित्यकारों के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना है ।
9) महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व का प्रभाव रेखाचित्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है ।
10) रेखाचित्रों में नारी का विद्रोही रूप दृष्टिगोचर है ।

11) समाज जीवन में पशु–पक्षियों का अंत्यत महत्त्वपूर्ण स्थान है । उनके स्थायी भावों को स्पष्ट किया है ।

12) रेखाचित्रों में पारिवारिक समस्याओं का अंकन है ।

13) रेखाचित्रों में नारी के दुःखमय जीवन का चित्रण ज्यादातर दिखाई देता है ।

14) रेखाचित्रों में ग्रामीण जीवन के विविध आयामों को विषद किया है ।

15) महादेवी वर्मा का ग्रामीण जीवन से प्रत्यक्ष संबंध रहा है ।

16) रेखाचित्रों द्वारा ग्रामीण जीवन की समस्याओं का अंकन मिलता है ।

17) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में पुरूष का विवाहेत्तर आकर्षण दिखाई देता है ।

18) रेखाचित्र की नारियाँ समाज से शोषित, पीडित रही है ।

19) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में नारी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक दिखाई देती है ।

20) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की नारियाँ खुद की समस्याओं का समाधान खुद ही करती है । वह जिंदगी के संघर्षमयी मोड़ पर भी रूकना नहीं चाहती है । वह साहसी एवं निड़र है ।

21) रेखाचित्र की नारी पर सामाजिक संस्कार दिखाई देते हैं पति के प्रति उसके मन में अनन्य प्रेम और विश्वास है ।

22) रेखाचित्रों में समाज द्वारा विधवा नारी पर अत्याचार हुए है । उसका पारिवारिक शोषण भी हुआ है । उसे पुनर्विवाह के लिए सताया गया है ।

23) रेखाचित्रों में समाज ने नारी को वेश्या व्यवसाय के लिए मजबूर किया है । वह विवशता के कारण वेश्यावृत्ती स्वीकार करती है ।

24) रेखाचित्रों में समाज वह माँ तथा अवैध संतान को समाज में कोई स्थान नहीं है । समाज द्वारा उन दोनों की उपेक्षा एवं तिरस्कार किया जाता है ।

25) रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज में पंचायत व्यवस्था और बिरादरी का महत्त्व दिखाई देता है ।

26) रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज में गृहकलह तथा आपसी बैर को उल्लेखित किया है ।

27) रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज के लोग देवी–देवताओं की पूजापाठ, व्रतवैकल्य करते है । तथा वे लोग अंधःश्रद्धा के साथ जुड़े है । उनके मन में पाप–पुण्य की भावना है ।

28) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज में लोग अतिथि को ईश्वर का रूप मानते हैं । लेकिन कभी–कभी गाँवों में अतिथि का कटु स्वागत भी होता है ।

29) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज की नारी में पतिव्रत दिखाई देता है । वह अपने सति व्रत का पालन करती है ।

महादेवी वर्मा के आलोच्य रेखाचित्र संग्रह का अध्ययन, विवेचन एवं विश्लेषण करने के उपरांत निम्नलिखित तथ्य सामने उभरकर आए हैं –

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र साहित्य पर यह शोध कार्य संपन्न हुआ है, जिसमें तत्कालीन समाज जीवन की समस्त प्रवृत्तियों को तलाश लिया है । हिंदी अनुसंधान क्षेत्र में महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों पर यह शोध कार्य प्रथम बार संपन्न हुआ है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज जीवन को केंद्र में रखकर स्वतंत्र विवेचन किया है । समाज जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत बारिकी के साथ पहली बार विवेचन एवं विश्लेषण किया है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में समाज में स्थित उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है । निम्न वर्ग गरीब है । उसे अनेक यातनाएँ दी जाती है । उच्च वर्ग हमेशा उसकी अवहेलना करता है । निम्न वर्ग अनेक

जातियों में विभाजित हुआ है । उच्चवर्ग और निम्न वर्ग में आर्थिक विषमता के कारण निर्माण हुई है ।

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में साहित्यकारों की आर्थिक स्थिति को उजागर किया है । साहित्यकारों ने अपने साहित्य द्वारा समाज में आर्थिक विषमता के दुष्परिणामों को दृष्टिगोचर किया है । साहित्यकार स्वयं आर्थिक दृष्टि से ग्रस्त होते हुए भी समाज के सामने दया के लिए हाथ नहीं फैलाते । वे अतिथियों का स्वागत आत्मीयत से करते हैं । वे अपनी सहनशक्ति से सभी आघातों का सामना करते हैं । साहित्यकारों ने समाज में स्थित जाति-पाँति के भेदभाव का, कन्यादान की प्रथा का विरोध किया । इसके लिए उन्हें अपने परिवारवालों से भी संघर्ष करना पड़ा ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में संयुक्त परिवार प्रथा दिखाई देती हैं । परिवारों में बड़ों का सम्मान एवं उनकी आज्ञा का पालन नैतिक कर्तव्य समझा जाता है । इसके कारण समाज में बालविवाह, अनमेल विवाह की प्रथाएँ दिखाई देती है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में अध्यापक और अध्येता में त्याग की भावना दिखाई देती है । दोनों का संबंध बहुत ही सुदृढ़ और पवित्र रहा है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में उच्च वर्ग ने निम्न वर्ग को यातनाएँ दी है । उच्च वर्ग ने हमेशा अपना हित ही देखा है । उच्च वर्ग ने निम्न वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा है । उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग को ही चोरी के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं ।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज का निम्न वर्ग शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है । इस वर्ग को तन ढकने के लिए भी किसी के सामने

हाथ फैलाना पड़ता है । निम्न वर्ग अपनी प्रगति के लिए संघर्षमय हुआ था लेकिन समाज के किसी भी वर्ग ने उसका सहयोग नहीं दिया ।

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज का निम्नवर्ग श्रम की मजदूरी पाकर उस पर जीविका चलाता है । इस वर्ग का अधिक शोषण हुआ है । वे रोटी रहा कपडा, मकान के लिए अधिक सोचने में क्रियाशील रहा है । उसकी आर्थिक परिस्थिति बहुत ही नाजुक रही है । रेखाचित्रों में अधिकतर समाज के निम्न वर्ग का ही चित्रण मिलता है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में निम्न वर्ग के लोगों की सरलता तथा तथाकथित उच्च वर्ग के ढोंगी, कृत्रिम, छल-कपट पूर्ण आचरण की तुलना की है । साथ ही आज के सभ्य समाज की पोल खोलने का साहसपूर्ण कार्य किया है । लेखिका ने निम्न वर्ग के प्रति संवेदना विषद की है । रेखाचित्रों में स्वामीभक्ति, बंधुप्रेम, गुरू-भक्ति, समर्पण, वात्सल्य आदि गुणों की प्रमुखता दिखाई देती है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित पुरूष प्रधान समाज नारी की उपेक्षा करता है । पुरूष ने पति के रूप में अपने कर्तव्य को निभाया है । लेकिन कभी कभी अपने अधिकारों को जताते हुए पत्नी पर अत्याचार भी किए है । कई पुरूष व्यसनाधिन है । उन्हें शराब, तम्बाकू पीने का व्यसन है । वह जुआरी भी है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित पुरूष प्रधान समाज ने लड़की के प्रति उपेक्षा प्रकट की है । वह लड़की की शिक्षा के खिलाफ है, लड़की की शादी को लेकर चिंतित दिखाई देता है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित पुरूष प्रधान समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण उपेक्षा से भरा है । उसने हर अपराध के लिए नारी को ही दोषी ठहराया है । उसे दुश्चरित्र माना जाता है । उसका तिरस्कार किया

जाता है । उसका सामाजिक, पारिवारिक, शारीरिक, मानसिक, भावनिक शोषण किया जाता है ।

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में सौतेली माँ का अलग स्थान है । समाज में सौतेली माँ के वात्सल्य एवं कठोर दोनों रूप दिखाई देते हैं ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में विवाह संस्था के अलग-अलग प्रकार दिखाई देते हैं । समाज ने नारी को बाल-विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह के लिए तैयार किया है । समाज में प्रेम विवाह एवं अंतर्जातीय विवाह भी दिखाई देता है । नारी ने बहुविवाह, अनमेल-विवाह, पुनर्विवाह को नकारा है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित समाज में पशु-पक्षियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । पशु-पक्षी मनुष्य के एकांत शून्य का आधार बने हैं । लेकिन ज्यादातर समाज में पशु- पक्षियों के प्रति निर्दयता दिखाई देती है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज शिक्षा से वंचित है । गाँव के बच्चों में शिक्षा की लालसा दिखाई देती है । स्थानिय संपन्न लोग दीन-हीन बच्चों की शिक्षा के खिलाफ हैं।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज में गरीबी अधिक मात्रा में दिखाई देती हैं । उनका रहन-सहन सीधा-सादा है । उनके घरों से उनकी दरिद्रता दृष्टिगोचर होती हैं ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज अनेक जातियों में बिखरा दिखाई देता हैं । हर एक जाति की अपनी अपनी विशेषताएँ है ।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज रूढ़ि एवं परंपरा का कट्टर अनुयायी है । वे प्राचीन परंपरा से दूर नहीं जाना चाहते । समाज में छुआ-छूत की भावना दिखाई देती है ।

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण समाज में नारी को पारिवारिक और सामाजिक अत्याचारों का सामना करना पड़ा है । समाज में लड़का–लड़की को लेकर भेदभाव दिखाई देता है ।

अनुसंधान की नई दिशाएँ

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है ।

1) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित पुरूष पात्रों का अध्ययन ।

2) महादेवी वर्मा के 'मेरा परिवार' रेखाचित्र का अनुशीलन ।

3) महादेवी वर्मा के 'अतीत के चलचित्र' और रामवृक्ष बेनीपुरी के 'माटी और मुरतें' रेखाचित्रों का तुलनात्मक अध्ययन ।

4) महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों का शिल्प ।

वास्तव में महादेवी वर्मा के रेखाचित्र साहित्य का अध्ययन करने के उपरांत ही ये विषय उभरकर सामने आए हैं । उक्त विषय स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की माँग करते हैं । आनेवाले समय में उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध–कार्य हो सकता है ।